कामिका एकादशी कथा (Kamika Ekadashi Katha)

कुंतीपुत्र धर्मराज युधिष्ठिर भगवान श्री कृष्ण से कहते हैं कि हे भगवन्, आषाढ़ शुक्ल के देवशयनी एकादशी तथा चातुर्मास्य का महत्त्व मैंने भली भांति से सुन लिया हैं । आप कृपा करके श्रावण कृष्ण एकादशी का क्या नाम है, सो बतलाइए ।

श्री कृष्ण भगवान कहने लगे कि हे कुंतीपुत्र युधिष्ठिर! इस कृष्ण एकादशी की कथा को स्वयं ब्रह्मा जी ने देवर्षि नारद जी से कही थी, वही मैं आज तुम्हें भी कहता हूँ ।

श्री नारद जी ने ब्रह्मा जी से पूछा था कि हे पितामह! श्रावण मास के इस कृष्ण पक्ष की एकादशी का क्या नाम है? क्या विधि है उसका क्या कथा है और उसका महत्त्व क्या है, ये सब सुनने की मेरी इच्छा है, सो कृपा कर के आप मुझे कहिए ।

नारद जी के ये वचन सुनकर ब्रह्मा जी ने कहा- हे नारद! समस्त मनुष्य जाति के हित के लिए तुमने बहुत ही सुंदर प्रश्न किया है । श्रावण मास की इस कृष्ण एकादशी को कामिका से नाम से जाना जाता है ।

इसे सुनने मात्र से ही मानव जाती को वाजपेय यज्ञ का फल मिलता है । इस दिन शंखधारी, चक्रधारी, गदाधारी भगवान श्री हरि विष्णु जी का पूजा होता है, जिनके अनेकों नाम है जैसे : श्रीधर, हरि, विष्णु, माधव, मधुसूदन अदि हैं । उनकी पूजा करने से जो फल मिलता है वो फल को तुम भी सुनो ।

जो फल गंगा, काशी, नैमिषारण्य और पुष्कर में स्नान करने से मिलता है, वहीं फल श्री हरि विष्णु भगवान के पूजन करने मात्र से प्रप्त होता है । जो फल सूर्य ग्रहण व चंद्र ग्रहण पर कुरुक्षेत्र और काशी में स्नान करने से मिलता है, समुद्र, वन सहित पृथ्वी दान करने से मिलता है, सिंह राशि के बृहस्पति में गोदावरी और गंडकी नदी में स्नान करने से भी प्राप्त नहीं होता, वे मात्र भगवान श्री हरि विष्णु जी के पूजन करने से मिल जाता है ।

जो मनुष्य श्रावण मास के इस एकादशी को भगवान श्री हरि विष्णु का पूजन करते हैं, उनसे देवता, गंधर्व और सूर्य आदि सब पूजित हो जाते हैं । अत: पापों से डरने वाले मनुष्यों को कामिका एकादशी का व्रत और श्री हरि विष्णु भगवान का पूजन अवश्य ही करना चाहिए । पाप रूपी कीचड़ में फँसे हुए और संसार रूपी समुद्र में डूबे हुए मनुष्यों के लिए इस एकादशी का व्रत और भगवान विष्णु का पूजन अत्यंत आवश्यक है । इससे बढ़कर पापों के नाशों का कोई दुसरा उपाय नहीं है।

हे नारद! स्वयं भगवान विष्णु ने भी कहा है कि कामिका व्रत से जीव कुयोनि को प्राप्त नहीं होता । जो मनुष्य इस एकादशी के दिन भक्तिपूर्वक से तुलसी दल भगवान विष्णु जी को अर्पण करते हैं, वे इस संसार के समस्त पापों से दूर रहते हैं । श्री हरि विष्णु रत्न, मोती, मणि तथा आभूषण आदि से जीतने प्रसन्न नहीं होते उतना की तुलसी दल से ।

तुलसी दल पूजन का फल चार भारी चाँदी और एक भारी स्वर्ण के दान के बराबर होता है । हे नारद! मैं स्वयं भी भगवान विष्णु की अतिप्रिय तुलसी को सदैव नमस्कार करता हूँ । तुलसी के पौधे को सींचने से मनुष्य की सभी यातनाएँ नष्ट हो जाती हैं । तुलसी के दर्शन मात्र से सब पाप नष्ट हो जाते हैं और उसके स्पर्श से मनुष्य पवित्र हो जाता है ।

कामिका एकादशी की रात्रि को दीपक दान तथा जागरण के फल का वर्णन तो चित्रगुप्त भी नहीं कह सके । जो भी व्यक्ति इस एकादशी की रात्रि में भगवान श्री हरि विष्णु के मंदिर में दीपक जलाते हैं । उसके पित्र स्वर्ग लोक में अमृत पान करते हैं तथा जो धी या तेल का दीपक जलाते हैं वह 100 करोड़ दीपक उसे प्रकाशित होकर सूर्य लोक को जाता है ।

ब्रह्मा जी कहते हैं कि हे नारद ! ब्रह्म हत्या तथा भ्रूण हत्या आदि पापों को नष्ट करने वाली इस कामिका एकादशी का व्रत मनुष्य को रत्न के साथ करना चाहिए । कामिका एकादशी का व्रत का माहात्म्य श्रद्धा से सुनने और पढ़ने वाले मनुष्य सभी पापों से मुक्त होकर विष्णु लोक को जाते हैं ।

pujakatha.com